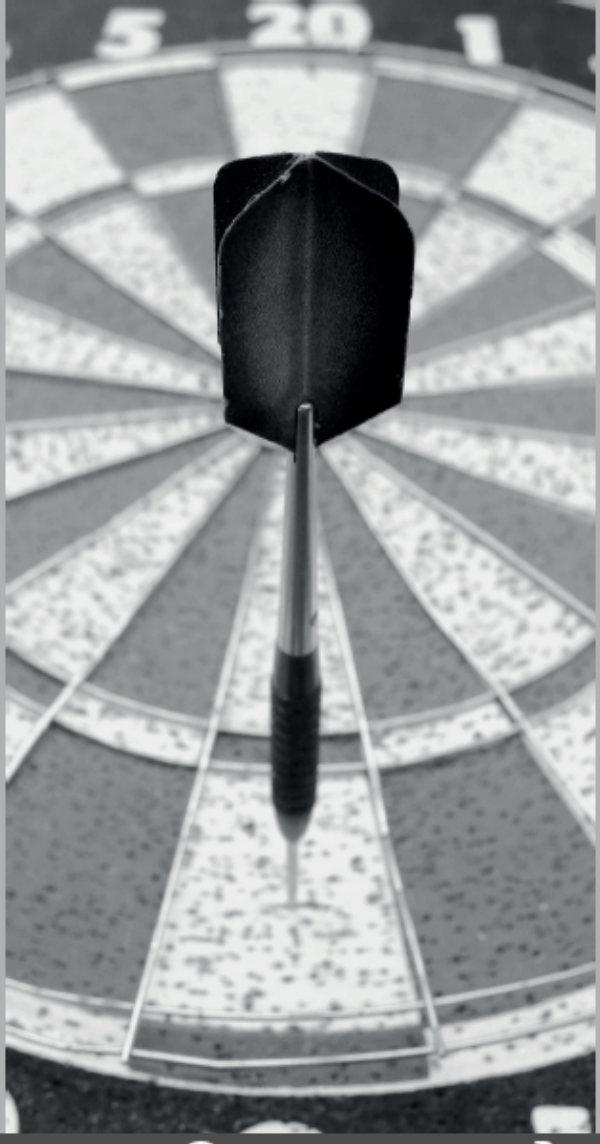

अपनी बुलाहट से समझौता न करे

आशिष रायचुर

© आशीष रायचुर, पासबान
ऑल पिपुल्स चर्च व वर्ल्ड आउटरिच
प्रथम प्रकाशन मुद्रित 2008 सितंबर

संचालक संपादिका/प्रकाशन मुख्य प्रबंधक : वैलेन्टिना ह्युबर्ट
सहायक संपादिकाः आरती रेचेल यशायाह
अनुवादः क्लारा संजीत टाकरी
कवर और ग्राफिक ड़िजाईनः करुणा जेरोम, by Faith Designz

संपर्क के लिए पता
ऑल पिपुल्स चर्च व वर्ल्ड आउटरिच
शोभा जेड़ A216
जक्कूर, बैंगलुर - 560 064
कर्नाटक, भारत

फोनः +91-80-2354 4328
ईमेलः contact@apcwo.org
वेबसाईटः www.apcwo.org

इस्तेमाल किये गये बाईबिल के संदर्भ ''पवित्र बाईबिल से लिया गया है।

मुफ्त बाँटे जाने के लिए
इस पुस्तिका की मुफ्त आवंटन ऑल पिपुल्स चर्च के सदस्य, सहयोगी व मित्रों के कारण संभव हो सका।

अपनी बुलाहट से समझौता न करे

विषय सुचि

1. परिचय 1

2. संसार की चिंता 3

3. बंधन जो बाँधते हैं 5

4. प्रेम जो ठंडा पड़ गया 7

5. दूसरों के द्वारा अपनाये जाने की चाह 9

6. मनुष्यों के तरिके से करना 10

7. एक बहुत बड़ा मूल्य 12

8. डर एक जान लेवा शत्रु 14

9. फैसला आपका है 17

1

परिचय

हम में से प्रत्येक के लिये परमेश्वर के पास एक विशेष योजना है, हम में से बहुत एक इसे समझते भी है और विश्वास भी करते है, कि परमेश्वर की विशेष योजना ही हमारे जीवन के लिये उसकी बुलाहट है। उसके पश्चात हम इस सच्चाई को भी जानते हैं कि परमेश्वर की योजना अपने आप पूरी नहीं हो सकती, दूसरे शब्दों में परमेश्वर की योजना को अपने (हमारे) जीवन में पूरा करने के लिये हमें अपनी भूमिका निभानी पडेगी, हमें परमेश्वर के साथ सहयोग करना जरूरी है ताकि हममें और हमारे द्वारा उसकी योजना सफल हो सके।

हमें यह समझना जरूरी है कि परमेश्वर ने हमें जो करने के लिये बुलाया है उसका महत्व या आकार ज्यादा मायने नहीं रखता, पर उसकी बुलाहट को पूरा करना ही ज्यादा महत्व रखता है। हममें से कुछ "बडे" कार्यो के लिये बुलाये गये है और कुछ "छोटे" कार्यो के लिये, "बडा" या "छोटा" यह सिर्फ मनुष्यों के दृष्टिकोण में ही है। पर परमेश्वर की दृष्टि में "बडा" या "छोटा" दोनों ही समान महत्व रखते है। वह (परमेश्वर) आतुर है कि उसने जिसे "बडी" बुलाहट दी है या "छोटी" बुलाहट दी है वे अपनी बुलाहट को पूरी करे, "बडी" व "छोटी" बुलाहट परस्पर एक दूसरे पर निर्भर करते है व एक दूसरे पर भरोसा रखते हैं अगर एक असफल हो तो इसका प्रभाव दूसरे पर पड़ता है। एक प्रचारक जो "बडी" भीड़ को प्रचार करता है उसे एक अनजान "छोटे" से साउंड संभालने वाले टैक्निशियन पर निर्भर होना पड़ता है जो कि पूरे साउंड सिस्टम को संभालता है। यदि टैक्निशियन

अपने कार्य को पूरी करने में असमर्थ हो या बुरे तरीके से करे तो क्या होगा?

परंतू हममें से हर एक चाहे "बडी" या "छोटी" बुलाहट में बुलाये गये हो परमेश्वर की योजना पूरी करने में बाधा डालने वाली चुनौतियों का सामना जरूर करेंगे और फिर शैतान भी परमेश्वर की बुलाहट में आगे बढने में रुकावट पैदा करता है। हममें से कुछ ने परमेश्वर की योजना के पिछे जोश के साथ चलना प्रारंभ तो किया पर दूसरे बातों से समझौता कर उसकी योजना में आखिर तक बने नहीं रह सके, हो सकता है कि हमारा ध्यान भटक गया हो और परमेश्वर के राज्य की खोज न करते हुए, हम लोग अपनी शक्ति, सफलता, धन-संपत्ति, और अपनी इच्छाओ को पूरा करने के लिये खर्च कर रहे है। हममें से कुछ रोजमर्रा के जिवन में ऐसे उलझ गये है कि स्वर्गीय बुलाहट का प्रत्युत्तर देने में अवहेलना कर रहे है हमारे पास आया हुआ परमेश्वर का वचन, स्वप्न व दर्शन, जों पवित्र आत्मा ने दिया वह सब अब एक कोने में रख दिया गया है, उन सब बातों को भूला दिया गया हो या डर और अविश्वास की वजह से जान-बुझकर नजर अंदाज कर दिया गया है। इस किताब का मकसद हमें झंझोडने व हिला देने के लिये है इसका मकसद यह है कि यह हमें कुछ फंदो से जिसमें हम जकड़े जा सकते हैं, उसकी चेतावनी देने के लिये हैं। नहीं तो हम एक अच्छी लड़ाई नहीं लड़ पायेंगे, और ना ही हमारे सामने रखी गयी दौड़ को पूरा कर पायेंगे।

2

संसार की चिंता

प्रेरित पौलुस के साथ कई ऐसे लोग थे, जिन्होंने उनके साथ काम किया व कई लोग उनकी सेवकाई के साथ जुडे हुए थे, जिनका नाम उन्होंने अपने पत्रों में उल्लेख किया है। एक ऐसा व्यक्ति है जिसके बारे में पौलुस तीन अलग-अलग जगहों में लिखते है। फिलेमोन को लिखे गये पत्र में (फिलेमोन 1:24) पौलुस देमास को अपने सहकर्मी के रूप में उल्लेखित करते हैं। कुलुसियों को शुभकामना भेजने के समय देमास का नाम भी जोड़ते हैं (कुलस्सियों 4:14) परन्तु अगली बार जब पौलुस देमास का नाम उल्लेख करते है, तो लिखते है, (2 तिमुथियुस 4:10) "क्योंकि देमास ने इस संसार को प्रिय जानकर मुझे छोड़ दिया है, और थिस्सलुनीके नगर को चला गया है"। आखरी बार देमास का नाम इस जगह पर लिखा गया है। कल्पना किजिये एक ऐसा व्यक्ति जो प्रेरित पौलुस के साथ कंधे से कंधा मिलाकर उसके सहकर्मी के रूप में काम किया हो, संसार के द्वारा ऐसे धोखे में आ जाये कि वह सेवकाई और प्रेरित को छोडकर चला जाये और संसार में अपनी योजना को पूरा करने में लगा रहे।

हममें से हर किसी को अपने हृदय को संसार के आकर्षण और चिंताओं से सुरक्षित बचायें रखना जरूरी है। एक तरफ जिंदगी ऐसा आसान और आरामदेह हो जाये कि हम अपनी स्वर्गीय बुलाहट के पिछे चलना ही भूल जाये, दुसरी तरफ जिंदगी हमें बहुत सारी समस्या और चिंताओं के बोझ से दबा दे कि हम उन सब चुनौतियों का सामना करके जय और सफलता पाने में इतना व्यस्त हो जाये कि

हम बुलाहट को ही नजर-अंदाज कर दें। यीशु ने कहा (मरकुस 4:19) "किन्तु संसार की चिन्ता, धन का धोखा और वस्तुओं का लोभ उनमें समा कर वचन को दबा देता है। वह निष्फल रह जाता है"। संसार को - इसकी समस्याओं या सुख को - परमेश्वर ने आपके लिये जो वचन कहा है उसे चुराने ना दे।

3

बंधन जो बाँधंते हैं

जबकी प्यार करने वाला और सुधि लेने वाला एक परिवार और मित्र होना बहुत अद्‌भुत है, कभी-कभी यही रिश्ते हमें बंधन में डाल देती है, और परमेश्वर के बुलाहट के पिछे चलने से रोकती है। ऐसे कितने जवान लड़के और लड़कियाँ है जिन्होंने अपने माता व पिता की इच्छा को पूरा करने के लिये स्वर्गीय बुलाहट के साथ समझौता किया है और उन बातों के पिछे चले जिसे परमेश्वर ने उनके लिये रखा ही नहीं था। लूका रचित सुसमाचार में यह उल्लेखित हैः (लूका 9:59-62) "यीशु ने दूसरे से कहा, " मेरे पिछे हो ले।' उसने कहा, "हे प्रभु, मुझे पहले जाने दीजिये कि मैं अपने मृत पिता को गाड़ दूं।" यीशु ने उससे कहा, "मरे हुओं को अपने मुरदे गाड़ने दो, पर तू जा और परमेश्वर के राज्य की कथा सुना।" एक और मनुष्य ने कहा, "है प्रभु, मैं आपके पिछे हो लूंगा, पर पहले मुझे जाने दीजिए कि मैं अपने घर के लोगों से विदा हो आऊं।"

यीशु ने उससे कहा, "जो कोई अपना हाथ हल पर रखकर पिछे देखता है, वह परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं।"

परिवारिक जिम्मेदारियों को पुरा करने से पहले परमेश्वर की बुलाहट को पूरा करने की जरूरत है। इसका यह मतलब नहीं हैं कि हमें पारिवारिक जिम्मेदारियों को नज़र अंदाज करने का लाईसेंस मिल गया हो। परंतु प्राथमिकता किसे दिया जाता है, वही मायने रखता है। परमेश्वर व उसके राज्य के प्रति हमारा समर्पण सारे

सांसारिक संबधों से पहले आना चाहिये। (लूका 14:26) "यदि कोई मेरे पास आए, और अपने पिता तथा माता, पत्नी और संन्तान, भाइयों और बहनों तथा अपने प्राण को अप्रिय न जानें, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता। क्या ऐसा कोई संबंध या रिश्ता है जो कि हमें परमेश्वर की बुलाहट को पूरी करने में बाधा डालती है?

शायद हमारी शुरुआत सही थी, पर अनजाने में दूसरे सांसारिक रिश्तों के मुकाबले यीशु को कम महत्व दिया जाने लगा है। अब समय आ गया है कि हम प्राथमिकता को जानें। सांसारिक रिश्तों की वजह से हम परमेश्वर की बुलाहट को त्याग नहीं सकते।

4

प्रेम जो ठंड़ा पड गया

परमेश्वर के लिये आपके अंदर कितनी तीव्र इच्छा (जलन) है? क्या आप परमेश्वर का घर और उसकी चीजों के लिये जोश और जलन से भरे हुए हैं। (भजन संहिता 69:9, युहन्ना न्ना 2:17) में यीशु के संबंध में लिखा गया है। "तेरे घर की धुन मुझे खा जाएगी।" परमेश्वर को खोजना और उसकी सेवकाई (सेवा) करना क्या आप सुविधा के अनुसार ही करते है पर प्राथमिकता के तौर पर नहीं? क्या समय मिलने पर ही आप प्रार्थना करते है, या प्रार्थना के लिये समय निकालते है? आप अपनी धार्मिक जिम्मेदारी को पुरी करके अपने मन को हल्का करने के लिये आप परमेश्वर के भवन को जाते हैं, या वह करना आपका आनंद का विषय है? भजन का लिखनेवाला अपने हृदय की बातों को बताते हुए लिखता है, (भजन संहिता 27:4) एक वर मैंने यहोवा से मांगा है, उसी के यत्न में लगा रहूंगाः कि मैं जीवन भर यहोवा के भवन में रहने पाऊं, जिससे यहोवा की मनोहरता पर दृष्टि लगाए रहूं, और उसके मंदिर में ध्यान किया करूं।" या आप शायद कह सकते हैं कि आप परमेश्वर को प्यार तो करते हैं, पर वह आग उतना तेज नहीं हैं जितना की पहले हुआ करता था। ठंड़ा पड़ गया हुआ प्रेम सुविधा के अनुसार काम करता है, लेकिन उसकी आज्ञा को पूरा नहीं करता अगर आप वहीं करेंगें, जो सुविधा के अनुसार हो परंतु उसकी आज्ञा के अनुसार नहीं तो आप उसकी बुलाहट को कभी भी पूरा नही कर सकते।

अगर हम परमेश्वर की बुलाहट को पूरी करना चाहते हैं, तो हमें परमेश्वर को, "प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन, अपने सारे प्राण, अपनी सारी बुद्धी, और अपनी सारी शक्ति से प्रेम करना होगा।" हमें अपने आप को झंझोडने और उसको हमारे पूरे हृदय से खोजने की जरूरत है। हमारा सर्वोत्तम उसे देने के लिए हमें ज्यादा से ज्यादा प्रयत्न करने की जरूरत है। (यहोन्ना)

5

दूसरों के द्वारा अपनाये जाने की चाह

परमेश्वर की बुलाहट के पिछे चलने की वजह से हर कोई हमारी प्रशंसा नहीं करेगा या नहीं सराहेगा। अगर हम लोगों के द्वारा अपनाये जाने के लिये ही जिंदा है तो फिर हम निराश हो सकते हैं, यहाँ तक की अपने नजदीकि लोगों के द्वारा भी। फिर हम वह करने के लिये स्वतंत्रता नहीं महसुस कर सकते हैं, जो करने के लिए परमेश्वर ने हमें बुलाया है। हमारे स्वर्गीय पिता को संतुष्ट करना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। यीशु ने कहा (यहोन्ना 5:41-44) "तुम एक दुसरे से आदर चाहते हो, और वह आदर जो अद्वैत परमेश्वर की ओर से है, नहीं चाहते, तब तुम किस प्रकार विश्वास कर सकते हो?" बहुत लोग दुसरे लोग या संस्था को खुश करने के लिये अपने आप को ऐसी स्थिती में डाल देते हैं कि वे परमेश्वर की बुलाहट के साथ भी समझौता कर लेते है। और जब परमेश्वर उन्हे कुछ नया, अनोखा या स्वतंत्र, लोगों के नजरिये से कुछ अलग करने के लिये बुलाता है, तो उसे करने में, कदम बढाने में वे असमर्थ होते है, क्योंकि उनमें यह ड़र रहता है कि उन्हें तिरस्कृत न किया जाए। हम जो जी चाहे वैसे मूर्खता पूर्वक कार्य करने की पैरवी नहीं कर रहे है, जिसे परमेश्वर के लोग भी अनुमति नहीं देते, पर हमारे कहने का मतलब यह हैं कि हमें लोगों की प्रशंसा से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा पालन करने की आवश्यकता है।

आज आप कहाँ है? क्या आप लोगों की प्रशंसा को न खोजते हुए, परमेश्वर ने जो कुछ करने आपको बुलाया है उन कार्यों को करने में समर्थ हैं?

6

मनुष्यों के तरीके से करना

सिर्फ हमारे जीवन का उद्धेश्य जानने के लिये ही हमें स्वर्ग से सुनने की आवश्यकता है ऐसा नहीं, पर लक्ष्य तक पहुंचने के लिये परमेश्वर के मार्गदर्शन की भी जरूरत है। हम स्वर्गीय बुलाहट को अपने तरीके से पुरा नहीं कर सकते। बुलाहट के साथ-साथ उसे पुरा करने का तरीका भी परमेश्वर से मिलना जरूरी है। प्रेरित पौलुस लिखते है (गलातियों 1:15-16) "परन्तु परमेश्वर ने मेरी माता के गर्भ ही से मुझे चुना था। उसने अपने अनुग्रह से मुझे बुला लिया। जब परमेश्वर की इच्छ़ा हुई कि मुझ में अपने पुत्र को प्रकट करे कि मैं अन्य जातियों में उसका सुसमाचार सुनाऊं तो मैने मांस और लहू से सलाह नहीं ली" परमेश्वर की बुलाहट को पुरा करने के लिये हम जो तरीका, उपाय, कार्यक्रम या रणनीति अपनाते हैं, यह सब परमेश्वर ने हमारे ह्रदय में ड़ाला हैं, या फिर यह हमारे अपने हैं? यह सब स्वर्ग से आया है या शरीर से? उन सब बातों के पिछें क्या मनोवृत्ति है? हम आत्मा के पिछें चलते हैं या मनुष्य का नकल कर रहे है?

हमें अपनें विचारों को पवित्र आत्मा की अगुवाई में समर्पित करने की जरूरत है। परमेश्वर की और उसके राज्य की सेवा करने के लिये हमारे अंदर जलन रहनी चाहिये। पर हमें पवित्र आत्मा की अगुवाई के अधीनता में समर्पित होने की जरूरत है। दूसरे "जा" रहे है, इसलिये हमें नहीं "जाना" हैं, या दूसरे "कह" रहे है, इसलिये नहीं "जाना" हैं, परन्तु हमें इसलिए जाना हैं, क्योंकि परमेश्वर ने हमें जाने

को कहा है। और हमें वहीं जाना हैं, जहाँ वह हमें भेजता है। परमेश्वर के बुलाहट को पुरा करने की कुंजी हैं, उसकी अगुवाई के पिछे चलना, रास्ते के हर कदम पर।

7

एक बहुत बड़ा मूल्य

परमेश्वर की बुलाहट बिना मूल्य चुकाये पूरी नहीं की जा सकती। बलिदान देना, सताव और कठिनाईयों को झेलने की, फिर आपदाओं का सामना करना, और बहुत कुछ करना है। यीशु ने उसके पीछे चलने के मूल्य के बारे बताया है। उसने कीमत का हिसाब लगाने को कहा है। (लूका 14:28-33)

> यीशु ने आगे कहा, "तुम में से ऐसा कौन व्यक्ति है जो गढ़ बनाना चाहता हो, और पहले बैठकर खर्च न जोडें कि पूरा करने की सामर्थ्य मेरे पास है कि नहीं? कहीं ऐसा ना हो कि नींव डालने के बाद वह उसको पूरा न कर सके, तब देखनेवाले उसका मज़ाक उड़ाएंगे और यह कहेंगे, इस मनुष्य ने गढ़ बनाने का काम आरम्भ तो किया, पर उसको पूरा न कर सका।" "कौन ऐसा राजा है जो दूसरे राजा से युद्ध करने जाता हो, और पहले बैठकर विचार न कर ले कि जो बीस हजार लेकर मुझ पर आक्रमण करने आ रहा है, क्या मैं दस हजार लेकर उसका सामना कर सकता हूँ अथवा नहीं? यदि वह सामना करने में असमर्थ होगा, तो जब तक दूसरा राजा दूर है, वह दूतों को भेज़कर उससे संधि करना चाहेगा। इसी तरह जो कोई अपना सब कुछ त्याग न दे, वह मेरा चेला नहीं हो सकता।

यीशु के पीछे चलने की कींमत क्या हैं? सब कुछ! यीशु ने कहा हमें सब कुछ त्याग करने की जरूरत है। "त्याग" करने का मतलब है जो कुछ हमारा है हम उन सब चिजों के मालिक नहीं है। परमेश्वर अब उन सब चीजों का मालिक है। और जो कुछ हमारे पास है, वह (परमेश्वर) उसके साथ जो चाहे करने को कह सकता है। हमारे पास क्या है, कितना है यह महत्वपूर्ण नहीं है। पर क्या हम यह सब परमेश्वर के लिए त्याग दिये हैं? या फिर अब भी हमारे जीवन में संपत्ती, योजनाएँ, सपने, महत्वकांक्षाएँ. संबंध और आदतें हैं - जिसे अगर परमेश्वर हमे छोड़ देने या त्याग देने को कहें, दूर करने और अलग करने को कहें तो वैसा करने में हमें कठिनाई होगी। क्या परमेश्वर हमारे पैसों का मालिक हैं? या हम ही पूरे तरीके से उसके मालिक है? हमारे पैसों से क्या करना चाहिए यह कहने के लिए क्या परमेश्वर के पास स्वतंत्रता हैं? जहाँ बोना परमेश्वर चाहता हैं, वहाँ बोने के लिए क्या हम इच्छुक हैं? हम कितना त्याग करते हैं, उससे नहीं, परंतु क्या त्याग नहीं करते उसी से यह पता चलता है कि हम परमेश्वर की बुलाहट को पूरा करते हैं या नहीं। कुछ ऐसे लोग हैं, जो काफी कुछ त्याग कर चुके हैं, पर उनके जीवन में ऐसा कुछ अभी भी त्यागने की जरूरत हैं, जो उन्हें परमेश्वर की बुलाहट की पूर्णता में प्रवेश करने में रुकावट पैदा करती हैं। वही कुछ छोटी-छोटी चीजों को त्याग करने का मूल्य दूसरे बड़े-बड़े त्याग से भी ज्यादा हैं। परन्तु प्रभु उसी की ही मांग करता हैं। क्या चुकानेवाली कींमत बहुत ज्यादा हैं? याद रखिए पिता का अनुमोदन पाना ही एक बड़ा पुरस्कार हैं। क्या परमेश्वर की बुलाहट को पूरी करने के लिए आप कींमत चुकाने तैयार हैं?

8

ड़र एक जान लेवा शत्रु

बहुत लोग ड़र की वज़ह से अपनी बुलाहट के साथ समझौता कर लेते हैं - अलफल होने का ड़र, भविष्य का ड़र, कमी का ड़र, मनुष्य का ड़र, ड़र के द्वारा बंधे होने के कारण वे आगे बढ़कर परमेश्वर की बुलाहट में चलने से ड़रते हैं। कुछ लोग सोचते होगे एक खास जगह में परमेश्वर कलिसिया स्थापित करने को कह रहा हैं, पर अगर मैं सफल न हो सकूँ तो क्या होगा? अगर कलिसिया न बढे तो क्या होगा? असफल होने का ड़र उन्हें आगे कदम बढाने से भी रोक देता हैं। हमें याद रखने की जरूरत है, कि परमेश्वर ही हमें जय दिलाता है। (2 कुरिन्थियों 2:14)

और हम अपना भरोसा परमेश्वर के ही ऊपर रखते है। सफलता और असफलता को हमें परमेश्वर के नजरिये से ही देखना चाहिए परमेश्वर की इच्छा को पूरा करना और उसने जो आज्ञा दिया है वही करना ही सफलता है। यह संख्या के ऊपर आधारित नहीं है, या बड़े नाम से भी नहीं है।

कुछ लोग भविष्य के ड़र से बंधे हुए हैं। वे सोचते है, अगर अब मैं वह करूँ जो परमेश्वर चाहता है की मैं करूँ, उसके बाद क्या होगा? वे ड़रे हुए हैं, क्योंकि वे भाविष्य को देख नहीं पा रहे हैं। परमेश्वर हमें सब कुछ एक ही समय में नहीं दिखाता, वह हमें एक कदम पर अगुवाई करता है। परमेश्वर शुरू से ही अंत को जानता है। उसे पता है, इसके बाद क्या होगा। हमें सिर्फ उसके ऊपर भरोसा

करना है, और वह हमारे जीवन में अब जो चाहता है वही हमें करने की जरूरत है। योजना बनाना महत्वपूर्ण हैं, परंतु परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना ज्यादा महत्वपूर्ण है। कभी-कभी जो योजना हमारे मन में आती है, वह परमेश्वर के वचन या मार्गदर्शन के साथ मेल नहीं खाएगा। पर फिर भी हमें उसकी आज्ञा पालन करने की जरूरत है।

कुछ लोग कमी या घटी के द्वारा बंधे हुए है। वे यह सोचते है, अगर वे वही करे जो परमेश्वर ने उन्हें करने को बुलाया है। तो उनकी रोजमर्रा की जरूरतें पुरी नहीं होगी। यीशु ने कहा, "परमेश्वर के ऊपर विश्वास रखो (मरकुस 11:22) मुहैया करने की प्रतिज्ञा प्रभु ने किया है। उसके वचनों पर विश्वास आपके हृदय से ड़र को दूर भगाने में सहायता करे।

दूसरे कुछ लोग मनुष्य के भय से बंधे हुए हैं। वे दूसरो के द्वारा भयभीत हैं, और ड़रे हुए है, हो सकता है जो उन्हें सतायें या फिर कभी-कभी दूसरे सेवकों का भय भी उन्हें सताता हैं। बाईबल बताती हैं

> "मनुष्य का भय खाना फंदा हो जाता है, परंतु जो यहोवा पर भरोसा रखता है, वह ऊंचे स्थान पर चढाया जाता है।" (नितीवचन 29:25)

परमेश्वर के ऊपर भरोसा रखे, और जो ड़र आपको जकड़े हुए है उसके विरुद्ध खड़े हो जाये। यहोशु ने जब अगुवाई करने की जिम्मेदारी ली, तो परमेश्वर ने उसे क्या कहा उसे स्मरण करें।

> "क्या मैंने तुझे आज्ञा नहीं दी? हियाव बांधकर दुढ़ हो जा; भय न खा, और तेरा मन कच्चा न हो; क्योंकि जहां-

> जहां तू जाएगा वहां-वहां तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे संग रहेगा। (यहोशु 1:9)

परमेश्वर में आप बलवंत बने, परमेश्वर में आपका विश्वास आपको उसकी आज्ञा का पालन करने के लिये स्वतंत्रता दे।

9

फैसला आपका है

हमारा परमेश्वर के साथ चलने में एक चिज अदभुत हैं, वह यह है कि हम अपने हृदय में उसे खोजने का निर्णय लेकर वैसा ही कर सकते है। हम पश्चाताप करके बदल सकते है। हम परमेश्वर के साथ आगे बढ़ सकते है। दरअसल हमें वैसा करना ही चाहिये। जब हम गलत निर्णय लेते है, समझौता करते है और समस्या में पड़ जाते है। तो परमेश्वर हमें उसमें से निकालने में समर्थ है। भजन का लिखने वाला कहता है (भजन-संहिता 40:2) "उसने मुझे सत्यानाश के गड़हे और दलदल के कीच में से उबारा, और मुझ को चट्टान पर खड़ा करके मेरे पैरों को दृढ़ किया है।" सबसे महत्वपूर्ण बात जो हमें अपने जीवन में करने की जरूरत्त है, वह यह है कि हम सच्चाई के साथ अपने आप को जाँचे और जरूरी बदलाहट को लाने के लिये परमेश्वरकी सामर्थ को प्राप्त करे।

क्या आपने अपनी बुलाहट के साथ समझौता किया हैं? क्या पुरे हृदय से आप परमेश्वर की बुलाहट के पीछे चल रहे हैं? अपने जीवन को परमेश्वर के बुलाहट के साथ संपूर्ण समातंरल में लाने के लिए आपको क्या बदलने की जरूरत है?

हमारे पास एक चुनाव है, हम उद्धार पाये हुए जीवन में आगे चल सकते हैं। फिर भी पूरे हृदय से परमेश्वर के बुलाहट के पिछे न चलते हुए जी सकते है। हम स्वर्ग तो जां पाएगें, परन्तु हम अनंतकाल के लिये अपने साथ कोई फल नही ले जा पाएगें। दूसरे पक्ष में हम अपने

जीवन में परमेश्वर की बुलाहट को पूरी करने के लिये जो भी आवश्यक है उसे कर सकते है, और खोज सकते है। आप पृथ्वी पर मूर्ख की तरह दिखाई दे सकते है, परन्तु जब आप स्वर्ग जाएंगे और हमारे कार्यों को आग के द्वारा परखा जाएगा, अनंतकाल तक बने रहने के लिये हमारे पास फल होगा। प्रेरित पौलुस तिमोंथी को यह कहते हुए उत्साहित करता है (2 तीमुथियुस 2:15) "अपने आप को परमेश्वर का ग्रहण योग्य और ऐसा काम करने वाला ठहराने का प्रयत्न कर जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से प्रस्तुत करता हो।" हम लोग जो परमेश्वर के द्वारा अनुमोदन प्राप्त कर चुके हैं, बिना लजाए हुए हमें हमारी तरफ से कुछ प्रयत्न करना जरूरी हैं। ताकि हम कार्यकारी बन सके। समय और प्रयत्नों के द्वारा हम परमेश्वर की बुलाहट के लिये अपने आप को तैयार कर सकते है। बलिदान और चुनौतियों का सांमना करना पड़ेगा। परन्तु हमें अपना सर्वोत्तम प्रयास करना चाहिये।

इस आखिरी घडी में, परमेश्वर ऐसे पुरुष और स्त्रीयों को चाहता है, जो उसके बुलाहट के पिछे 100% समर्पित हो वह ऐसे लोगों को चाहता है जो उसके लिये बिक गये हो, जो लोग समझौता नहीं करने वाले लोग हो।

हम प्रेरित पौलुस के इन वचनों से आपको उत्साहित करना चाहते हैं। (फिलिप्पियों 3:12-14)

"मेरे कहने का अर्थ यह नहीं हैं कि मैं इन सब को पा चुका हूँ, या मैं सिद्ध हो चूका हूँ। पर मैं उस वस्तु को पकड़ने के लिये दौड़ा चला जा रहा हूँ, जिसके लिये मसीह यीशु ने मुझे पकड़ा था। हे भाइयों मेरी भावना यह नहीं कि मैं पकड़ चुका हूं। परंतु यह एक काम मैं करता हूँः जो बातें पीछे रह गई हैं, मैं उनको भूलकर आगे की बातों

की और बढ़ता हुआ निशाने की और दौडा चला जा रहा हूं, ताकि वह ईनाम पाऊं जिसके लिये परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है।"

जो चिज यीशु मसीह ने आपके लिये रखा है उसे दृढ़ता के साथ थामें रहे। आखिरी मंजिल तक पहुंचने के लिऐ भरपूर प्रयास करते रहिए। इसके लिये कुछ कोशिश की जरूरत है, परन्तु उसका महत्व भी है, अपने जीवन में परमेश्वर की जो बुलाहट है उसके साथ समझौता मत किजीये।

ऑल पिपुल्स कलिसीया के बारे में दो शब्द

ऑल पिपुल्स कलिसिया में हमारा दर्शन बैंगलूर नगर में नमक और ज्योति के समान बनने के साथ साथ दूसरे देशों के लिये एक आवाज बनना है।

यह पुस्तिका आपके लिये मुफ्त का भेंट हैं। हमें विश्वास है यह पुस्तिका के पढ़ने के द्वारा आप आशीषित हुए है।

आपके समान हजारों और लोगों को इन पुस्तिकाओं की प्रति मुफ्त में बांटी जाती है। हम चाहते हैं की आप परमेश्वर का वचन को दूसरों के साथ बांटने में हमारे साथ एक आर्थिक साझेदारी निभाये। आपकी आर्थिक मदद दूसरों के पास परमेश्वर का वचन ले जाने में सहायता करेगी। परमेश्वर आपको जैसा अगुवाई करे, वैसा आप ऑल पिपुल्स कलिसीया के साथ सहयोगी बन सकते हैं, आप, आपका अनुदान राशी चेक/डिमांड़ ड्राफ्ट या मनि ऑर्डर के द्वारा ''ऑल पिपुल्स कलिसिया, बैंगलूर को भैंज सकते हैं।

जब आप हमें पत्र लिखें, तो दूसरे प्रकाशनों के लिये लिखें, उसके साथ साथ आप हमें यह भी बताये, यह प्रकाशन ने किस रीति से आपके अंदर कार्य किया। आपका प्रार्थना निवेदन और सुझाव भी अवश्य लिख भेजें।

निम्न पते पर हमसे संपर्क करें

All Peoples Church
Sobha Jade A216
Jakkur, Bangalore - 560 064
Karnataka, INDIA

Phone: +91 80 2354 4328
Email: contact@apcwo.org
Website: www.apcwo.org

All Peoples Church & World Outreach, Bangalore, India, has extended its ministry by launching its Bible College & Ministry Training Center (APC-BC&MTC) in August 2005. APC-BC&MTC equips, trains and releases faithful men and women to impact villages, towns and cities in India and other nations, for Jesus Christ.

APC-BC&MTC offers 2 programs:

- The two-year and three-year **Bible College** programs are for full-time students and provides spiritual and practical ministry training along with academic excellence. The programs are designed to equip and empower students to successfully fulfil the call of God upon their lives. Upon completing the two-year program students will receive a **Diploma in Theology & Christian Ministry (Dip.Th.&CM).** The three-year program will lead to a **Bachelor's Degree in Theology & Christian Ministry (B.Th.&CM)**.

- The **Practical Ministry Training** is for graduates from the Bible College who desire to undergo practical training. Those completing one or more years receive a **Certificate in Practical Ministry** indicating the duration of involvement.

Classes are conducted in English. The faculty comprises of both trained and anointed teachers of the Word. All faculty and students have access to APC's Study Centre and Library (SC&L). The SC&L contains books, teaching tapes, videos, VCDs/DVDs and music CDs.

Publications from All Peoples Church

A Church in Revival
Ancient Landmarks
A Real Place Called Heaven
A Time for Every Purpose
Being Spiritually Minded and Earthly Wise
Biblical Attitude Towards Work
Breaking Personal and Generational Bondages
Change
Divine Order in the Citywide Church
Don't Compromise Your Calling
Don't Lose Hope
Fulfilling God's Purpose for Your Life
Giving Birth to the Purposes of God
God Is a Good God
God's Word
How to Help Your Pastor
Integrity
Kingdom Builders—Vol. I
Laying the Axe to the Root
Living Life Without Strife
Open Heavens
Our Redemption
The Conquest of the Mind
The Night Seasons of Life
The Power of Commitment
The Presence of God
The Refiner's Fire
The Spirit of Wisdom, Revelation and Power
We Are Different
Who We Are in Christ
Women in the Workplace

Gospel Booklets

He is Here
Love That Is Deeper Than Love Itself
What Can Wash Away My Sins?

भारत में ऑल पीपुल्स कलिसीयायें कहाँ कहाँ स्थित है।

फिलहाल ऑल पिपुल्स कलिसीया निछे दिये पतों पर स्थित है।

ऑल पिपुल्स चर्च - बैंगलुर (कर्नाटक)

ऑल पिपुल्स चर्च - थोक्कोट्टु, मंगलोर (कर्नाटक)

ऑल पिपुल्स चर्च - कल्यान, मुम्बई (महाराष्ट्र)

ऑल पिपुल्स चर्च - विशाखापट्नम (आंन्ध्रप्रदेश)

ऑल पिपुल्स चर्च - सानितपुर (आसाम)

ऑल पिपुल्स चर्च - ब्रम्हपुर (ऊड़िसा)

ऑल पिपुल्स चर्च - नागपुर (महाराष्ट्र)

समय-समय पर नये कलिसीआओं की स्थापना हो रही है। ताजा सुचि और ऑल पिपुल्स चर्च के साथ संपर्क करने या अधिक जानकारी के लिए कृपया आप हमारी वेबसाईट www.apcwo.org में जायें, अथवा @apcwo.org पर ई-मेंल भेजें।

Notes

हममें से हर एक चाहे ''बड़ी'' या ''छोटी'' बुलाहट में बुलाये गये हो परमेश्वर की योजना पुरी करने में बाधा ड़ालनेवाली चुनौतियों का सामना जरूर करेंगे। हो सकता है कि हमारा ध्यान भटक गया हो और परमेश्वर के राज्य की खोज़ न करते हुए, हम लोग अपनी शक्ति, सफलता, धन संप्पति को अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिये खर्च कर रहे हैं। पवित्र आत्मा का दिया हुआ वचन, स्वप्न दर्शन को हो सकता है एक कोने में ड़ाल दिया गया हो।

यह किताब आपको झंझोड़ने व उन फंदो के बारे में चेतावनी देने के लिये है जिसमें आप हो सकता है कि जकड़े जाऐ। एक अच्छी लड़ाई लड़े और आपके सामने रखी गयी दौड़ को पुरा करें।

आशिष रायचुर

All Peoples Church & World Outreach
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617, +91-80-65970617
Email: contact@apcwo.org
Website: www.apcwo.org